प्रातःक्लास 20-3-68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। बाप बच्चों से पूछते हैं, तुम यहां बैठे हो स्वदर्शनचक्रधारी तो हो ही नम्बरवार पुरुषार्थअनुसार। मूलवतन भी जरूर याद आता होगाबच्चों को। यह भी जरूर याद आता होगा पहले2 हम शान्तिधाम में रहने वाले हैं, फिर आते हैं सुखधाम में। यह तो जरूर अन्दर में समझते होंगे। मूलवतन से लेकर यह सारा सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है यह भी बुधि में है। इस समय हम हैं ब्राह्मण। फिर देवता, क्षत्री... बनेंगे फिर पिछाड़ी में असुर बनेंगे यह तो बुधि में चक्र चलना चाहिए ना। बच्चों को नालेज बुधि में है। बाप ने समझाया है। आगे नहीं जानते थे। अभी सिर्फ तुम ही जानते हो। दिन प्रति दिन तुम्हारी बुधि होती रहेगी। बहुतों को सिखलाते रहते हैं तो जरूर पहले तुम ही स्वदर्शनचक्रधारी बनेंगे। यहां तुम बैठे हो, बुधि से जानते होंगे वह हमारा बाप है। वही सुप्रीम टीचर है सिखलाने वाला। उस ने ही समझाया है हम 84 का चक्र कैसे लगाते हैं। बुधि में तो जरूर याद होगा ना। यह लेशन हर वक्त अच्छी रीत याद करना है। लेशन कोई बड़ा नहीं है, सेकण्ड का लेशन है। बुधि में रहता है हम कहां के रहवासी हैं फिर कैसे पार्ट बजाने आते हैं। 84 का चक्र है। सतयुग में इतने जन्म... यह चक्र तोयाद करेंगे ना। अपना जो पोजिशन मिला है पार्ट बजाया है वह भी जरूर बुधि में याद रहेगा। हम यह डबलसिरताज थे। फिर सिंगल ताज वाले बने हैं। फिर सारी राजाई ही चली गई। तमोप्रधान बन गये। यह चक्र तो फिरना चाहिए ना। इसलिए तुम्हारा नाम रखा है स्वदर्शनचक्रधारी। आत्मा को ज्ञान मिला हुआ है। आत्मा को दर्शन होता है। आत्मा जानती है हम ऐसे चक्र लगाती हैं। अभी फिर जाना है घर। बाप ने कहा है मुझे याद करो तो घर पहुंच जावेंगे। ऐसे भी नहीं है इस समय तुम इस अवस्था में बैठ जावेंगे। नहीं। बाहर की भी बहुत बातें बुधि में आती हैं। किसको क्या याद आता होगा, किसको क्या याद आता होगा। यहां तो बाप कहते हैं और सभी बातों को समेट एक को ही याद करो। श्रीमत मिलती है। भगवान की जो डायरेक्शन मिलती हैउस पर ही चलना है। स्वदर्शनचक्रधारी बनने तुमको अन्त तक मेहनत करनी है। पहले तो कुछ भी पता नहीं था। अभी बाप बतलाते हैं। उनको याद करने से सभी याद आ जाते हैं। रचता और रचना के आदि मध्य, अन्त का सारा राज़ बुधि में आ जाता है। यह तो सबक मिलता है घर में भी याद कर सकते हैं। यह है बुधि से समझने की बात। तुम वन्डरफुल स्टुडन्ट हो। बाप ने समझाया है आठ घंटा भल आराम भी करो। आठ घंटा शरीर निर्वाह लिए काम करो। वह धंधा आद भी करना है। साथ में यह भी धंधा बाप दादा ने दिया है आप समान बनाने का। यह भी शरीर निर्वाह ही है ना। वह है अल्प काल लिए और यह है 21 जन्म शरीर निर्वाह लिए। इनका बहुत महत्व है। तुम जो पार्ट बजाते हो इस समय उसका बहुत महत्व है। जो जितनी मेहनत करते हैं उतना ही फिर भक्ति-मार्ग में उनकी पूजा होती है। यह सभी धारणा तुम बच्चों को ही करनी है। तुम पार्ट-धारी हो। बाप तो सिर्फ ज्ञान देने का पार्ट बजाते हैं। बाकी शरीर निर्वाह के लिए पुरुषार्थ तुम करेंगे। बाबा तो नहीं करेंगे ना। यह दादा करेगा। बाबा नहीं करेगा। वह तो आते हैं ही बच्चों को समझाने लिए कियह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जागरफी कैसे रिपीट करती है चक्र कैसे फिरता है। यह समझाने लिए ही आते हैं। युक्ति से समझाते रहते हैं। बाप कहते हैं बच्चे गफ्लत मत करो। स्वदर्शनचक्रधारी अथवा लाईट हाउस बनना है। अपने को आत्मा समझना है। यह तुम तो जानते हो शरीर बिगर आत्मा पार्ट बजा नहीं सकती है। पार्ट बजाने वाली आत्मा ही है। मनुष्यों को यह कुछ भी पता नहीं है। भल तुम्हारे पास आते हैं अच्छा2 भी कहते हैं परन्तु स्वदर्शनचक्रधारी नहीं बन सकते। इसमें बहुत प्रैक्टीस करनी पड़ती है। स्वदर्शनचक्रधारी बनने की प्रैक्टीस अच्छी हो जावेगी तो तुम फिर कहां भी जावेंगे तो जैसे ज्ञान का सागर हो जावेंगे। स्टुडन्ट पढ़ कर जैसे टीचर बन जाते हैं। टीचर बन कर फिर नालेज को पढ़ाते हैं। और भी धंधे में लगते हैं। तुम्हारा धंधा ही टीचर बनाना। सभी को स्वदर्शनचक्रधारी बनाओ। बाबा ने देखा है बच्चों ने एक चित्र बनाया है, डबल सिरताज राजाएं सिंगल ताज वाले फिर कैसे बनते हैं। यह तो ठीक है। परन्तु कब से कब तक डबल सिरताज वाले थे, फिर कब से कब

तक सिंगल ताज वाले बने। फिर कब राज्य छीना गया। वह डेटस भी चाहिए। यह बहुत बड़ा बेहद का ड्रामा है। यह तो निश्चय है हम फिर से देवता बनते हैं। अभी ब्राह्मण हैं। यह ब्राह्मण कुल इस संगम युग का है। यह किसको पता नहीं है जब तक कि तुम बताओ। यह है तुम्हारा अलौकिकजन्म। लौकिक और पारलौकिक बाप से वर्सा मिलता है, अलौकिक से वर्सा नहीं मिलता है। यह है अलौकिक। जो इन द्वारा बाप तुमको वर्सा देते हैं। गाते भी हैं हे प्रभु। ऐसे कब नहीं कहेंगे हे प्रजापिता ब्रह्मा। लौकिक और पारलौकिक को याद करते हैं। यह बातें कोई मनुष्य नहीं जानते। तुम जानते हो। पारलौकिक बाप का है अविनाशी वर्सा, और लौकिक बाप का है विनाशी वर्सा। समझो कोई राजा का बच्चा है, समझता है 5करोड़ हमको वर्सा मिलना है, और फिर बेहद के बाप का वर्सा सामने देखेंगे तो कहेंगे इसके भेंट में यह विनाशी वर्सा क्या है। यह तो सभी खत्म हो जानी है। परन्तु आजकल के जो लखपति हैं-करोड़पति हैं उनकी माया एकदम चटकी हुई है। वह आवेंगे ही नहीं। बाप है हीगरीब निवाज़। भारत भी ग़रीब है ना। भारत में मनुष्य भी बहुत ग़रीब, साधारण हैं। अभी तुम पुरुषार्थ कर रहे हो बहुतों का कल्याण करने का। अक्सर कर के बिमारों को वैराग्य होता है। ऐसा जीना क्या काम का। ऐसा कोई रास्ता मिले जोहम मुक्ति धाम में चले जावेंगे। दुःख से छूट जावें। दुःख से छूटने लिए ही मुक्ति आद मांगते हैं। सतयुग त्रेतामें मांगते ही नहीं। क्योंकि दुःख होता ही नहीं। यह सभी बातें अभी तुम समझते हो। बुधि को पाते रहेंगे। बाबा के बच्चे कितने ढेर होंगे। जो सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी देवता बनने वाले हैं वह ही आकर ज्ञान लेंगे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। यह बुधि और कोई में नहीं है। यह ज्ञान सिवाय बाप के और कोई दे न सके। अभी तुम कोई भी सन्यासी गुरु पास नहीं जावेंगे। थर्ड क्लास कोई होंगे वह जावेंगे। कहां फंस भी पड़ेंगे। तुम तो बेहद के बाप को छोड़ कहां भी नहीं जावेंगे। जो सच्चे-सच्चे बच्चे हैं जिनका बाप-दादा से पूरा प्यार है। प्रजापिता ब्रहमा भी तो बाप है ना। परन्तु यह कहते हैं तुम मुझे भी याद न करो। भल यह रथ है, तुम समझते हो इन द्वारा ही वह बाप मिलता है। परन्तु याद तो उनका करना है ना। यह तो जो जीयेंगे तो रथ कायम है। सगाई हो गई है। तुम बच्चों को सिखलाते रहते हैं। समझते हो नालेज तो बहुत सहज है। बाकी पावन बनने में ही मायाविघ्न डालती है। बाप को याद करना भूल जाते हैं। कोई बात में गफलत की तो बस। गफ़लत से ही हराते हैं ना। इनका मिशाल बाक्सिंग से अच्छा लगता है। बाक्सिंग में एक दो पर जीत पहनते हैं। लड़ाई होती है। कुस्ती को लड़ाई नहीं कहेंगे। वह कुस्ती अलग है। बच्चे जानते हैं माया एकदम भूला देती है। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चे अपन को आत्मा समझो। सारा दिन भी नहीं। टाईम भी देते हैं। बाप खुद समझते हैं इसमें मेहनत है। बाप बहुत युक्ति बताते हैं। हम आत्मा है। एक शरीर छोड़ दूसरा हम पार्ट बजाती हैं। हम आत्मा हैं बेहद के बाप के बच्चे हैं। यह अच्छी रीत पक्का करना चाहिए। बाबा फील करते हैं माय इनकी बुधि योग तोड़ देती है। नम्बरवार तो है हीं। इस हिसाब से ही राजधानी बनती है। सभी एक रस हो जाये तो राजाई ही नहीं बने। राजा-रानी प्रजा शाहुकार सभी बनने हैं। यह बातें तुम्हारे सिवाय दुनिया में किसको भी पता नहीं हैं। हम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। यह तुम्हारे मे भी जो अन्यन्य है उनको याद रहता है हम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। यह भूलना न चाहिए। बच्चे समझते हैं हम भूल जाते हैं। नहीं तो बहुत खुशी रहनी चाहिए। हम विश्व के मालिक बनते हैं। पुरुषार्थ से बना जाता है। सिर्फ कहने से नहीं। बाप तो आने से ही पूछते हैं बच्चे सावधान। स्वदर्शनचक्रधारी हो बैठे हो। बाप भी स्वदर्शनचक्रधारी है ना। उनको यह पता नहीं है कि यह ल०ना० हैं। इन्हों कोज्ञान किसने दिया। इस ज्ञान द्वारा इन्हों ने यह पद पाया है। मनुष्य तो जैसे जंगलीआदमी हैं। स्वदर्शनचक्र बना दिया है, दिखाते हैं इन से सीधी को मारा। तुमको तो अभी इन चित्र बनाने वालों पर हंसी आवेगी। विष्णु क्या चीज़ है यह भी किसको पता नहीं। यह निशानी है पवित्र युगल गृहस्थ आश्रम की। चित्र शोभता है बाकी यह कोई राईट चित्र है नहीं। यह तो है ही ल०ल्ल्मी०ना०। पहले तुम भी नहीं जानते थे। चार भुजा

यहां कहां से आवेगा। इन सभी बातों को तुम्हारे में भी नम्बरवार है जो समझते हैं। नेपाल भी अष्टमी पर पर छोटे बच्चे को शिकार कराना सिखलाते हैं। छोटे बच्चे को भी हाथ में कुकरी पकड़ाये शिकार करना सिखलाते हैं। कुकड़ो हंसो को ऐसे खत्म कर देते हैं। उन से बड़ा होगा तो बतक को मारेंगे, उन से बड़ा होगा तो पाडा उठाते हैं। सिर एकदम अलग हो जाना चाहिए। नही बदसोण समझते हैं। जैसे कलकते में बकरी को मारते हैं उनको फिर महाप्रसाद समझते हैं। कहते हैं आगे मनुष्य आदमखोर थे।

तो बाप कहते हैं सारा तुम बच्चों के पुरुषार्थ पर मदार है। बाप की याद से ही पाप कटते रहेंगे। सब से जास्ती नम्बरवन युद्ध चलते रहना है। टाईम तो बाप ने दिया है। गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है। नहीं तो बच्चों आद को कौन सम्भालेंगे। वह सभी कुछ करते हुये यह प्रेक्टीस करनी है। बाकी और कोई बात नहीं है। कृष्णको दिखाते हैं अकासुर-बकासुर आद को स्वदर्शन चक्र से मारा। अभी यह तुम जानते हो चक्र आदकी बात नहीं। यह तो योगबल से पाप कटते हैं। हथियार आद की बात नहीं। कितना फर्क है। यह बाप ही समझाते हैं। मनुष्य मनुष्य को समझा नहीं सकते। मनुष्य मनुष्य की सदगति कर न सके। रचता और रचना के आदि मध्य अन्त का राज़ कोई समझा न सके। स्वदर्शनचक्र का अर्थ क्या है सो भी अभी बाप ने समझा दिया है। शास्त्रों में तो कहानियां ऐसी बनाई हैं जो बातमत पूछो। कृष्ण को भीहिंसक बना दिया है।

इसमें एकान्त में बहुत विचार सागर मथन करना होता है। बच्चे पहड़ा देते हैं वह टाईम तो बहुत अच्छा है। इसमें तो बहुत याद कर सकते हैं। बाप को याद करते स्वदर्शनचक्र फिराते रहे। जितना याद करेंगे उस खुशी में निन्द भी फिट जावेगी। जिसकोधन मिलता है तो बहुत खुशी में रहते हैं ना। कब भी झूटका नहीं खावेंगे। तुम तो जानते हो हम तो स्वर हेल्दी, वेल्दी-निरोगी बनते हैं' तो इसमें अच्छी रीत लग जाना चाहिए। यह भी बाप जानते हैं ड्रामा अनुसार जो कुछ चलता है वह ठीक है। फिर भी पुरुषार्थ कराते रहते हैं। बाप राय शिक्षा भी देते हैं। ऐसे बहुत हैं जिन में न ज्ञान है न योग है। कोई बुधिवान, विद्वान आद आये तो बात कर न सके। सर्विस एबुल बच्चे जानते हैं हमारे पास कौन अच्छे2 समझाने वाले हैं। फिर बाप भी देखते हैं यह बुधिवान पढ़ा-लिखा है उनको समझाने वाला बुधू मिला है तो फिर खुद प्रवेश कर उनको उठा लेंगे। फिर कई समझदार बच्चे जो हैं वह कहते हैं हमारे में तो इतना ज्ञान नही था जितना बाप ने बैठ समझाया। कोई को अपना अहंकार आ जाता है। यह भी उनको मदद करना ड्रामा में पार्ट नूंधा हुआ है। ड्रामा बड़ाविचित्र है। इसकोसमझने में बड़ी सुधि बुधि चाहिए। यह नहीं समझते हैं हमारे में ताकत ही कहां है समझाने की। सच्चार बच्चे सच्च बोलते हैं। कोई तो झूठ ही झूठ बोलते हैं। दुनिया में जो भी मनुष्य हैं सभी झूठे ही हैं। नम्बरवन झूठ है ईश्वर को सर्व-व्यापी कहना। एक तो झूठ बोलते हैं और फिर गालियां देते हैं। बाप कहते हैं मेरे को क्या2 कहते रहते हैं। मै स्वर गोरा मेरा चित्र भीकाला बना देते हैं। अभीतुम बच्चे जानते हो हम यह राजधानीस्थापन कर रहे हैं। जिसमें सब गोरे ही गोरे थे। काले वहां होते ही नहीं। यह भी तुम गोरा और काला चित्र बना कर लिखो 84 जन्म काम चिक्षा पर बैठ ऐसे काले बन गये हैं। आत्मा ही बनी है। ल०ना० को काला चित्र बनाना यह तो अनाड़ीपना है ना। यह नहीं समझते हैं आत्मा काली बनी है। यह तो सतयुग के मालिक थे। गोरे थे। फिर बाद में काम चिक्षापर बैठ सांवरा बनते हैं। आत्मा ही पुनर्जन्म लेते2 तमोप्रधान बनी है तो आत्मा भी काली तो शरीर भी काना हो जाता है। तुम हंसी कूडी में पूछ सकते हो ल०ना० को कहां गोरा कहां काला क्यों दिखाते हो। कारण? ज्ञान तो है नहीं। कृष्ण गोरा फिर कृष्ण हो सांवरा क्यों बनाते हो। यह तुम अभी जानते हो। कृष्णतो गोरा था फिर 84 जन्म लेते2 सांवरा बना है। गांवरे का छोरा जरूर सांवरा ही होगा ना। अभी तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। गोरा और सांवरा का ज्ञान तुम्हारे बुधि में है। बाप गोरा बनाते हैं, रावण काला बना देता है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।

-: : ओमशान्ति: : -